Vol. 3 | Issue : 08
www.shooliniuniversity.com
मंगलवार, 29 अक्टूबर 2024
फॉलॉ करें

शूलिनी यूनिवर्सिटी पत्रिका

स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड न्यू मीडिया की प्रस्तुति

'अवसरों के ऊँचाइयों' की ओर
पेज -03

'हर छात्र शूलिनी अनुभव का हकदार है'
पेज -03

इस उपलब्धि के साथ, विवि ने नवाचार और शोध में अग्रणी

शूलिनी की हैट्रिक... लगातार तीसरी बार हासिल किया टॉप रैंक

उपलब्धि

साहिल ठाकुर

शूलिनी यूनिवर्सिटी ने प्रतिष्ठित टाइम्स हायर एजुकेशन (THE) वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स में देश की सभी निजी विश्वविद्यालयों के बीच लगातार तीसरी बार शीर्ष स्थान हासिल करने का गौरव प्राप्त किया है।

इस उपलब्धि के साथ, विश्वविद्यालय ने नवाचार और शोध में अपनी अग्रणी स्थिति को और भी मजबूत कर लिया है, क्योंकि यह 2025 के लिए दोनों प्रमुख वैश्विक विश्वविद्यालय रैंकिंग सिस्टम - क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स और THE वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स में शीर्ष रैंक वाला निजी विश्वविद्यालय बन गया है। शोध और नवाचार पर केंद्रित 15 साल पुरानी इस यूनिवर्सिटी को वैश्विक रैंकिंग में 401-500 बैंड में रखा गया है। भारतीय संस्थानों में इससे ऊपर केवल भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) बेंगलुरु को 251-300 बैंड में स्थान दिया गया है। इस साल की रैंकिंग्स में 107 भारतीय विश्वविद्यालयों ने जगह बनाई है (पिछले साल 91 थे), लेकिन शूलिनी ने शोध गुणवत्ता और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण में शीर्ष स्थान बनाए रखते हुए सभी भारतीय विश्वविद्यालयों में दूसरा स्थान हासिल किया है। अन्य भारतीय संस्थान जो शीर्ष 500 बैंड में हैं, उनमें अन्ना यूनिवर्सिटी, महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी और सवीता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एंड टेक्निकल साइंसेस शामिल हैं। केवल सवीता इंस्टीट्यूट ही शूलिनी यूनिवर्सिटी के साथ देश की शीर्ष निजी विश्वविद्यालय की श्रेणी में समान बैंड में है। अन्य प्रमुख संस्थान जैसे IIT इंदौर (501-600), BITS पिलानी, IIT पटना और थापर यूनिवर्सिटी (601-800) श्रेणी में हैं।

शूलिनी ने शोध गुणवत्ता और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण में शीर्ष स्थान बनाए रखते हुए सभी भारतीय विश्वविद्यालयों में...

02

स्थान हासिल किया है...

शूलिनी को वैश्विक स्तर पर 416वां रैंक मिला है

शूलिनी यूनिवर्सिटी की उत्कृष्टता को "अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण" में उसके वैश्विक प्रदर्शन से और भी उजागर किया गया है, जहां उसे देश में दूसरे स्थान और वैश्विक स्तर पर 416वां रैंक मिला है। इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर प्रतिक्रिया देते हुए, विश्वविद्यालय के संस्थापक और चांसलर प्रोफेसर पीके खोसला ने कहा, ₹ये रैंकिंग्स विश्वविद्यालय में प्रोत्साहित और किए जा रहे उच्च गुणवत्ता वाले शोध का प्रमाण हैं।

रैंकिंग हमें कैटेगरी 1 के रूप में मान्यता

दुनिया के शीर्ष 500 विश्वविद्यालयों में हमारी रैंकिंग हमें कैटेगरी 1 विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता देती है। इसके अलावा, हमें शोध गुणवत्ता में वैश्विक स्तर पर 175वां स्थान मिला है, जो बेहद प्रेरणादायक उपलब्धि है।' प्रो चांसलर विशाल आनंद ने इसे 'एक अद्भुत उपलब्धि' बताया। उन्होंने कहा, 'इस प्रतिष्ठित स्थान को प्राप्त करने में सभी स्टाफ और शोधकर्ताओं ने योगदान दिया है। यह शूलिनी के अद्वितीय उद्यमशील माहौल को भी दर्शाता है, जहां हम छात्रों को निडर होकर नवाचार करने और अपने विचारों को वास्तविक दुनिया में बदलने की संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं।' उपलब्धि पर प्रतिक्रिया देते हुए, कुलपति प्रोफेसर अतुल खोसला ने कहा, ₹हमारी रैंकिंग शूलिनी की वैश्विक रूप से एकीकृत शिक्षा के प्रति समर्पण को दर्शाती है। दुनिया के बेहतरीन विश्वविद्यालयों के साथ अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से हम शोध को आगे बढ़ा रहे हैं, छात्रों को वैश्विक करियर के लिए तैयार कर रहे हैं और हमारे समुदाय की विविधता और पहुंच को बढ़ा रहे हैं। मुझे विश्वास है कि हमारे फैकल्टी और शोधकर्ता आने वाले वर्षों में इसी तरह की कड़ी मेहनत और समर्पण जारी रखेंगे।'

THE World University Rankings 2025

शूलिनी यूनिवर्सिटी एक अनूठी जगह है

इनोवेशन के अध्यक्ष अशिष खोसला ने कहा, 'शूलिनी एक अनूठी जगह है जहां नवाचार और अलग तरीके से सोचना हमारे हर काम का मूल है। शोध गुणवत्ता और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण में उच्च स्कोर हमारे द्वारा जल, ऊर्जा, सौर ऊर्जा, हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र, कैंसर, नैनोपार्टिकल्स और एआई के क्षेत्रों में बनाए गए गहरे विशेषज्ञता को दर्शाते हैं।' यह दोहरी मान्यता विश्वविद्यालय के लिए गर्व का क्षण है, जो स्किमागो रैंकिंग्स में रसायन विज्ञान, भौतिकी और खगोल विज्ञान की श्रेणियों में भी शीर्ष पर है।

यूनिवर्सिटी ऑफ मेलबर्न के साथ डुअल डिग्री कोर्स की शुरुआत

वंशिका

भारत की अग्रणी शोध-आधारित शूलिनी यूनिवर्सिटी ने दुनिया की शीर्ष रैंक वाली यूनिवर्सिटी ऑफ मेलबर्न के साथ मिलकर डुअल डिग्री प्रोग्राम में छात्रों का दाखिला शुरू किया है, जिससे यह दुनिया का पहला संस्थान बन गया है जो इस प्रकार का कार्यक्रम प्रदान कर रहा है।

चार साल का यह प्रोग्राम 2+2 मॉडल पर आधारित है, जहां छात्र पहले दो साल शूलिनी यूनिवर्सिटी में सामान्य विज्ञान पाठ्यक्रम पढ़ेंगे और फिर अगले दो साल के लिए विशेष अध्ययन हेतु यूनिवर्सिटी ऑफ मेलबर्न में स्थानांतरित होंगे।

यह प्रोग्राम व्यापक और गहरे विज्ञान पाठ्यक्रम के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय अनुभव और ऑस्ट्रेलिया में नेटवर्किंग के अद्वितीय अवसर प्रदान करता है। डुअल डिग्री प्रोग्राम के पहले बैच के छात्रों ने अपनी पढ़ाई शुरू कर दी है।

यूनिवर्सिटी ऑफ मेलबर्न के डिप्टी वाइस-चांसलर (ग्लोबल, कल्चर एंड एंगेजमेंट) प्रोफेसर माइकल वेस्ली और डीन ऑफ साइंस, प्रोफेसर मोइरा ओ'ब्रायन, ने पहले बैच के छात्रों से मुलाकात की और उनसे बातचीत की। इस प्रतिनिधिमंडल का उद्देश्य गहरे अकादमिक साझेदारियों की संभावनाओं का पता लगाना और छात्रों व फैकल्टी के साथ संवाद करना था।

पहले बैच के छात्रों को प्रोफेसर ओ'ब्रायन ने एक प्रेरणादायक संबोधन दिया, जिसमें उन्होंने इस नए बैच और उनके द्वारा अपनाए जाने वाले नवाचारी पाठ्यक्रम के महत्व पर जोर दिया। प्रोफेसर ओ'ब्रायन ने शूलिनी यूनिवर्सिटी के वाइस-चांसलर प्रोफेसर अतुल खोसला का आभार व्यक्त किया, जिनकी दृष्टि और प्रयासों से इस डुअल डिग्री प्रोग्राम को साकार किया गया है।

शूलिनी यूनिवर्सिटी के संस्थापक और प्रो-चांसलर विशाल आनंद ने कहा कि यूनिवर्सिटी ऑफ मेलबर्न के प्रतिनिधिमंडल की यह यात्रा 'हमारी साझा दृष्टि का प्रमाण है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से प्रतिभा और नवाचार को पोषित करने की प्रतिबद्धता है।'

इस अवसर पर वाइस-चांसलर प्रोफेसर अतुल खोसला ने कहा, ₹यह यात्रा हमारे शूलिनी यूनिवर्सिटी में वैश्विक शैक्षणिक माहौल बनाने के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

शूलिनी के 20 शोधकर्ता विश्व के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों की सूची में शामिल

पवन कल्याण

शूलिनी विश्वविद्यालय के 20 शोधकर्ताओं को विश्व के शीर्ष 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों में शामिल कर स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता दी गई है। यह सूची एलेसवियर के स्कोपस डेटा के आधार पर स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गई है।

स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की यह सूची वैज्ञानिक प्रभाव के लिए एक मानक मानी जाती है और इसमें दो श्रेणियां हैं: एक पूरे करियर के डेटा पर आधारित और दूसरी 2023 में प्रदर्शन पर केंद्रित।

शूलिनी विश्वविद्यालय के संस्थापक और कुलाधिपति प्रोफेसर पी.के. खोसला ने शोधकर्ताओं को बधाई देते हुए कहा कि ₹यह मान्यता विश्वविद्यालय के वैश्विक शोध में बढ़ते प्रभाव और वैज्ञानिक उत्कृष्टता के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।₹

2023 में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए जिन शोधकर्ताओं को मान्यता दी गई है, उनमें शामिल हैं: सदानंद पांडेय, प्रदीप सिंह, गौरव शर्मा, पंकज राइज़ादा, अमित कुमार, श्याम सिंह चंदेल, संतानु मुखर्जी, धृति कपूर, अनिल कुमार, वसुधा हसिजा, अमित कुमार, अनीता सुढैक, पूजा धीमान, रोहित शर्मा, गुरुराज कुदुर जयप्रकाश, रोहित जसरोटिया, दिनेश कुमार, राजेश कुमार, दीपक कुमार, और पूनम नेगी।

इनमें से आठ वैज्ञानिक करियर-लंबे प्रभाव वाली सूची में भी शामिल हैं: सदानंद पांडेय, संतानु मुखर्जी, गौरव शर्मा, श्याम सिंह चंदेल, प्रदीप सिंह, अमित कुमार, पंकज राइज़ादा, और अनिल कुमार।

इस बीच, शूलिनी विश्वविद्यालय ने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की सूची में उन विश्वविद्यालयों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है, जिन्हें केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग्स फ्रेमवर्क (NIRF) में उच्च रैंकिंग मिली है। विश्वविद्यालय को NIRF में 70वीं रैंक मिली थी, लेकिन अब इसके 20 शोधकर्ता दुनिया के शीर्ष 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में शामिल हैं।

शूलिनी विश्वविद्यालय के शोधकर्ता लगातार इस सूची में अपनी उपस्थिति सुधार रहे हैं। 2020 में केवल 5 प्रतिशत शोधकर्ताओं के साथ शुरू हुआ यह सफर अब 20 शोधकर्ताओं तक पहुंच गया है।

स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की यह सूची वैज्ञानिक प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए एक व्यापक विधि का उपयोग करती है, जिसमें विभिन्न मेट्रिक्स जैसे कि उद्धरण (साइटेशन), एच-इंडेक्स, और एक संयोजित संकेतक जिसे सी-स्कोर (सी-स्कोर) कहा जाता है, शामिल हैं।

क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन के साथ डुअल डिग्री समझौता

संवाददाता : यूके की प्रमुख क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन और शूलिनी यूनिवर्सिटी ने एक साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं, जिससे भारतीय छात्रों को भारतीय और यूके की योग्यता के साथ डुअल मास्टर डिग्री प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। इस समझौते के तहत, भारतीय छात्र अपनी स्नातकोत्तर पढ़ाई का पहला वर्ष शूलिनी यूनिवर्सिटी में और दूसरा वर्ष क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी में पूरा करेंगे। यह समझौता मुख्य रूप से बिजनेस और मैनेजमेंट से संबंधित डिग्रियों पर केंद्रित है, जिनमें एमएससी अकाउंटिंग और फाइनेंस, एमएससी डिजिटल मार्केटिंग और एमएससी इंटरनेशनल बिजनेस शामिल हैं।

शूलिनी यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर, प्रोफेसर अतुल खोसला ने कहा कि यह समझौता छात्रों के लिए कई नए रास्ते खोलेगा। उन्होंने कहा, 'देश की अग्रणी निजी यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त करने के बाद, डुअल डिग्री का चयन करने वाले छात्रों को यूके में उपलब्ध सर्वोत्तम शैक्षिक प्रथाओं का अनुभव प्राप्त होगा।'

क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी की वाइस प्रिंसिपल इंटरनेशनल, प्रोफेसर हेलेन बेली ने इस कार्यक्रम के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा, 'यह साझेदारी समझौता छात्रों के लिए एक विशिष्ट मंच तैयार करता है, जिसमें वे एक वास्तविक अंतरराष्ट्रीय शिक्षण वातावरण में खुद को तैयार कर सकते हैं और यह दिखाता है कि क्वीन मैरी लगातार नए अवसरों के द्वार खोल रही है।'

क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी का स्कूल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट एसोसिएशन टू एडवांस कॉलेजिएट स्कूल्स ऑफ बिजनेस (AACSB) द्वारा मान्यता प्राप्त है, जिसे बिजनेस स्कूल मान्यताओं का गोल्ड स्टैंडर्ड माना जाता है।

मंचतंत्र के संयुक्त रंग

परिसर वार्षिक इंटर डिपार्टमेंट कल्चरल कंपटीशन 'मंचतंत्र' से गुलजार रहा, जो संकाय के साथ तीन दिनों तक चला। लिबरल आर्ट्स और कानूनी अध्ययन विभाग ने प्रतिष्ठित ट्रॉफी उठाई। **पेज-04 पर और तस्वीरें देखें।**

फोटो : प्रेम भट्टी

फ्रैंकलिन यूनिवर्सिटी के साथ समझौता, 2+2 प्रोग्राम की शुरुआत

संवाददाता : शूलिनी यूनिवर्सिटी ने कोलंबस स्थित फ्रैंकलिन यूनिवर्सिटी के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसके तहत 2+2 प्रोग्राम स्थापित किया जाएगा।

यह समझौता फ्रैंकलिन यूनिवर्सिटी के ग्लोबल प्रोग्राम्स और स्ट्रैटेजिक इनिशिएटिव्स के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट, डॉ. गॉडफ्रे मेंडेस की यात्रा के दौरान औपचारिक रूप से किया गया। यह सहयोग छात्रों के लिए शैक्षिक अवसरों को व्यापक बनाने और दोनों विश्वविद्यालयों के बीच नए मार्ग खोलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। बातचीत का मुख्य फोकस 2+2 प्रोग्राम की स्थापना पर रहा, जिसका उद्देश्य वैश्विक अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देना है। इस प्रोग्राम के तहत छात्र अपनी डिग्री के पहले दो साल शूलिनी यूनिवर्सिटी में और शेष दो साल फ्रैंकलिन यूनिवर्सिटी में पूरा करेंगे, जिससे उन्हें संयुक्त डिग्री प्राप्त होगी। यह पहल छात्रों को दोनों शैक्षिक वातावरण का अनुभव करने और वैश्विक दृष्टिकोण प्राप्त करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती है।

अपने दौरे के दौरान, डॉ. मेंडेस ने शूलिनी यूनिवर्सिटी के चांसलर प्रो. पी.के. खोसला, वाइस चांसलर प्रो. अतुल खोसला और अन्य डीन और डायरेक्टर्स के साथ चर्चा की। दोनों संस्थानों ने इस प्रोग्राम के प्रति आशावाद व्यक्त किया और इसे शैक्षिक अवसरों के विस्तार और अंतर्राष्ट्रीय साझेदारियों को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण माना। वाइस चांसलर, प्रो. अतुल खोसला ने कहा, "हमें फ्रैंकलिन यूनिवर्सिटी के साथ साझेदारी कर खुशी हो रही है, जो अपने नवाचारी शैक्षिक दृष्टिकोण के लिए जानी जाती है।"

शूलिनी से विचार

खून रोकने वाला क्रांतिकारी हर्बल स्प्रे

अपनी तेज़ रक्त-थक्के बनाने की क्षमता और घाव भरने के गुणों के साथ, यह स्प्रे प्राथमिक चिकित्सा और आपातकालीन चिकित्सा देखभाल में क्रांति लाने की उम्मीद है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां स्वास्थ्य सुविधाएं सीमित या दूर हैं।

आहना नाथ

शूलिनी यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने एक क्रांतिकारी हर्बल स्प्रे विकसित किया है, जो चोटों से होने वाले अत्यधिक रक्तस्राव को रोकने के लिए तैयार किया गया है। इस आविष्कार का नेतृत्व शूलिनी यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज के प्रोफेसर डॉ. दीपक कुमार ने किया है, जो कुमाऊं विश्वविद्यालय के डॉ. रजेश्वर कमल कांत आर्य के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। यह स्प्रे यूपेटोरियम एडेनोफ़ोरम पौधे की प्राकृतिक चिकित्सा और रक्त को जमाने की क्षमता का उपयोग करता है।

जब इसे घाव पर सीधे लगाया जाता है, तो यह एक सुरक्षात्मक फिल्म बनाता है। बाजार में उपलब्ध सिंथेटिक उत्पादों के विपरीत, जो लिडोकेन और बेंज़ेथोनियम क्लोराइड जैसे रसायनों पर निर्भर होते हैं, यह स्प्रे प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग करता है, जो इसे एक सुरक्षित विकल्प बनाता है।

लिडोकेन और बेंज़ेथोनियम क्लोराइड से बने पारंपरिक स्प्रे अक्सर त्वचा में जलन और दीर्घकालिक दुष्प्रभाव जैसे डर्माटाइटिस का कारण बनते हैं। दूसरी ओर, यह हर्बल स्प्रे यूपेटोरियम एडेनोफ़ोरम के प्राकृतिक गुणों का उपयोग करता है, जो रक्त को जल्दी जमाता है और घाव को जल्दी भरने में मदद करता है।

01 | शूलिनी यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने एक क्रांतिकारी हर्बल स्प्रे विकसित किया है, जो चोटों से होने वाले अत्यधिक रक्तस्राव को रोकने के लिए तैयार किया गया है। इस आविष्कार का नेतृत्व शूलिनी यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज के प्रोफेसर डॉ. दीपक कुमार ने किया है।

02 | लिडोकेन और बेंज़ेथोनियम क्लोराइड से बने पारंपरिक स्प्रे अक्सर त्वचा में जलन और दीर्घकालिक दुष्प्रभाव जैसे डर्माटाइटिस का कारण बनते हैं।

शोधकर्ताओं ने एक विस्तृत निष्कर्षण प्रक्रिया अपनाई

शोध दल ने इस स्प्रे के निर्माण में एथाइल सेलूलोज़ और पॉलीएथिलीन ग्लाइकॉल (PEG 400) जैसे सुरक्षित और प्रभावी तत्वों का इस्तेमाल किया, ताकि घाव पर एक पतली, पारदर्शी और चिकनी परत बनाई जा सके, जो तुरंत रक्तस्राव रोकते हुए घाव को संक्रमण से बचाती है। शोधकर्ताओं ने एक विस्तृत निष्कर्षण प्रक्रिया अपनाई, जिसमें उत्तराखंड के भीमताल से यूपेटोरियम एडेनोफ़ोरम के पत्ते इकट्ठा किए गए और इथेनॉल का उपयोग कर सक्रिय यौगिकों को निकाला गया। स्प्रे के फार्मूले को कई परीक्षणों से गुज़ारा गया, ताकि सही मात्रा में पॉलिमर, प्लास्टिसाइज़र और सॉल्वेंट का उपयोग सुनिश्चित हो सके।

स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में उन्नत शोध

यह स्प्रे पर्यावरण के अनुकूल और गैर-विषाक्त है, जो इसे अन्य सिंथेटिक स्प्रे से अलग बनाता है, जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले प्रोपेलेंट्स का उपयोग करते हैं। साथ ही, यह किफायती है और बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए उपयुक्त है, जिससे इसे अस्पतालों, क्लीनिकों, प्राथमिक चिकित्सा किट्स और आउटडोर गतिविधियों के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। यह आविष्कार न केवल आपातकालीन स्थितियों में रक्तस्राव को रोकने के लिए एक आसान और प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है, बल्कि उन क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण साबित होगा जहां स्वास्थ्य सुविधाएं सीमित या दूरस्थ हैं। शूलिनी यूनिवर्सिटी का यह नवाचार स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में उन्नत शोध के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

हमारे संकाय छात्रों को अच्छी तरह से विकसित व्यक्ति बनने में सहायता करने के लिए प्रतिबद्ध हैं

'हम आधुनिक शिक्षा को आध्यात्मिक मूल्यों के साथ एकीकृत करते हैं'

इंटरव्यू

साहिल ठाकुर

पीएनएम गीता आदर्श विद्यालय की प्रिंसिपल डॉ. स्नेह शर्मा ने एक प्रेरक बातचीत में अपनी शानदार शैक्षणिक यात्रा और युवा दिमाग को आकार देने के अनुभवों से अंतर्दृष्टि साझा की। साक्षात्कार के अंश :–

Q. कृपया हमें अपनी और अपने विद्यालय की शैक्षणिक यात्रा के बारे में बताएं?

मेरी शैक्षणिक यात्रा कठिन अध्ययन और निरंतर विकास का एक संतोषजनक मिश्रण रही है। मैंने अपनी स्कूली शिक्षा सीनियर सेकेंडरी गर्ल्स स्कूल, सोलन से पूरी की, उसके बाद पीजी डिग्री कॉलेज, सोलन से भूगोल (ऑनर्स) में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद मैंने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला से भूगोल में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की। इसके अतिरिक्त, मैंने भारत भर के प्रतिष्ठित संस्थानों से एम.एड, एम.फिल और शिक्षा में पीएच.डी की व्यावसायिक डिग्री भी पूरी की है। 1999 से, मुझे सोलन में एक प्रसिद्ध सीबीएसई-संबद्ध, सह-शिक्षा, अंग्रेजी-माध्यम विद्यालय, पीएनएनएम गीता आदर्श विद्यालय में सेवा करने का सौभाग्य मिला है। मैंने एक टीजीटी सामाजिक विज्ञान शिक्षिका के रूप में अपनी यात्रा शुरू की, बाद में एक पीजीटी, उप-प्रधानाचार्य के पद पर रही और वर्तमान में प्रधानाचार्य के रूप में सेवा कर रही हूँ। हमारे विद्यालय के बारे में जो बात सबसे अलग है, वह है आधुनिक शिक्षा का श्रीमद्भगवद्गीता के आध्यात्मिक मूल्यों के साथ अनूठा एकीकरण, जो हमारे पाठ्यक्रम और स्कूल के लोकाचार का एक अनिवार्य हिस्सा है।

Q. छात्रों और कर्मचारियों दोनों के लिए एक सहायक शिक्षण वातावरण सुनिश्चित करने के लिए आप किन रणनीतियों का उपयोग करते हैं?

शिक्षकों के रूप में, यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम एक ऐसा आधार तैयार करें जो हमारे छात्रों में शैक्षणिक उत्कृष्टता और मजबूत नैतिक मूल्यों दोनों का पोषण करे। विशेष रूप से ग्रेड 6 और किशोर समूहों के छात्रों के लिए मेरे स्कूल में, हम नियमित परामर्श सत्र सुनिश्चित करते हैं। ये सत्र छात्रों को लचीलापन बनाने, शैक्षणिक दबाव से निपटने, साथियों की गतिशीलता को प्रबंधित करने और अपने माता-पिता और बड़ों को महत्व देने के लिए मार्गदर्शन करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। हमारे संकाय छात्रों को अच्छी तरह से विकसित व्यक्ति बनने में सहायता करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। नियमित परामर्श हमारे विद्यालय के पारिस्थितिकी तंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जहाँ छात्रों को न केवल शिक्षा में बल्कि व्यक्तिगत विकास में भी मार्गदर्शन मिलता है। ये प्रयास सुनिश्चित करते हैं कि वे अच्छी तरह से समायोजित, जिम्मेदार नागरिक बनें, जो अपने करियर और जीवन की चुनौतियों दोनों के लिए तैयार हों।

Q. आप अपने विद्यालय में छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को कैसे सुनिश्चित करते हैं?

हमारे विद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत ध्यान दिया जाता है और हम इसे समग्र दृष्टिकोण से संबोधित करते हैं। सीबीएसई पाठ्यक्रम का पालन करने के अलावा, हम सुबह की सभाओं के दौरान नियमित रूप से श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ करते हैं। छात्रों को विशिष्ट श्लोकों का जाप करने और उनके अर्थों को समझने, माइंडफुलनेस और भावनात्मक लचीलापन को बढ़ावा देने के लिए एक रोस्टर सौंपा जाता है। हम भगवद्गीता की शिक्षा को और अधिक आत्मसात करने के लिए भाषण प्रतियोगिता और श्लोक पाठ जैसी अंतर-विद्यालय प्रतियोगिताएँ भी आयोजित करते हैं। इन गतिविधियों का उद्देश्य सोलन जिले में आध्यात्मिक मूल्यों और मानसिक स्वास्थ्य का संदेश फैलाना है। भगवद्गीता का सार - विनम्रता, धैर्य और सभी के प्रति सम्मान हमारे छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को पोषित करने में एक मार्गदर्शक शक्ति है।

> **01 | शिक्षकों के रूप में, यह ज़िम्मेदारी है कि हम एक ऐसा आधार तैयार करें जो छात्रों में शैक्षणिक उत्कृष्टता और मजबूत नैतिक मूल्यों दोनों का पोषण करें।**

> **02 | शारीरिक गतिविधियाँ न केवल छात्रों को फिट रहने में मदद करती हैं बल्कि उन्हें तनाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना भी सिखाती हैं।**

Q. आप वर्तमान शिक्षा प्रणाली से कितने संतुष्ट हैं?

मैं नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 से काफी संतुष्ट हूँ, क्योंकि यह छात्रों के समग्र विकास पर जोर देती है। 360-डिग्री मूल्यांकन मॉडल यह सुनिश्चित करता है कि छात्रों के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक पहलुओं पर विचार किया जाए, जिससे शुद्ध शिक्षा से लेकर समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। एनईपी 2020 एक सुविचारित नीति है जो शिक्षा के भविष्य को आकार देने में हितधारकों शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय की भूमिका पर महत्वपूर्ण महत्व देती है। यदि इसे प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो यह छात्रों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल को बढ़ावा देकर वास्तव में शैक्षिक परिदृश्य को बदल सकता है।

Q. आप अकादमिक यात्रा के साथ-साथ खेल को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं?

अक्सर कहा जाता है, 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग रहता है,' और मेरा दृढ़ विश्वास है कि खेल एक छात्र के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शारीरिक गतिविधियाँ न केवल छात्रों को फिट रहने में मदद करती हैं बल्कि उन्हें तनाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना भी सिखाती हैं। खेलों के माध्यम से, छात्र अपनी ऊर्जा को सकारात्मक रूप से प्रसारित कर सकते हैं, जिससे उन्हें नशीली दवाओं के दुरुपयोग या तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता जैसे नकारात्मक प्रभावों से दूर रहने में मदद मिलती है। आज की दुनिया में, मोबाइल फोन का उपयोग एक बढ़ती हुई चिंता है, जो कुछ मामलों में गम्भीर तनाव और अवसाद का कारण बनती है।

Q. आपको क्या लगता है कि आज की पीढ़ी शिक्षा और सीखने के मामले में कितनी विशेषाधिकार प्राप्त है?

आज की पीढ़ी बेहद विशेषाधिकार प्राप्त है, खासकर प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रगति के साथ। मेरे समय में, भूगोल में रिमोट सेंसिंग जैसे जटिल विषयों को समझने के लिए गहन प्रयास की आवश्यकता होती थी, लेकिन अब, वर्चुअल रियलिटी जैसे उपकरणों के साथ, जो अवधारणाएँ कभी कठिन लगती थीं, उन्हें आसानी से समझा जा सकता है। आज छात्रों के पास चुनने के लिए पेशेवर पाठ्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला है, जो उन्हें अपने जुनून को आगे बढ़ाने की अनुमति देती है, चाहे वह शैक्षणिक हो या गैर-शैक्षणिक। भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रम छात्रों को उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना और अधिक सहायता करते हैं, जिससे शिक्षा पहले से कहीं अधिक सुलभ और विविध हो जाती है।

Q. आप छात्रों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

अपने आप पर और अपने मूल मूल्यों पर विश्वास करें। हमेशा अपने माता-पिता और मानवता का सम्मान करें। अति महत्वाकांक्षी बनने से बचें और जीवन में अतिवाद से बचें। दुनिया विकर्षणों और भ्रमों से भरी है; इसलिए, अपनी बुद्धि का बुद्धिमानी से, सही समय पर और सही दिशा में, सकारात्मक मानसिकता के साथ उपयोग करें। अवसर अनंत हैं, अगर आपके लिए एक भी दरवाज़ा नहीं खुलता है, तो दूसरा दरवाज़ा बनाएँ। सबसे महत्वपूर्ण बात, अपने मूल्यों से कभी समझौता न करें। अगर कभी आपको अपने सिद्धांतों को छोड़ने का दबाव महसूस हो, तो सोचने के लिए समय निकालें और अगर ज़रूरी हो, तो अपने विश्वासों के प्रति सच्चे रहने के लिए अपना रास्ता बदलें। यह रास्ता, हालांकि चुनौतीपूर्ण है, लेकिन अंततः आपको आत्म-साक्षात्कार और ईश्वर-साक्षात्कार की ओर ले जाएगा, जो मेरा मानना है कि जीवन का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।

लिबरल आर्ट्स संकाय ने मंचतंत्र की 'समग्र विजेता' ट्रॉफी जीती

कशिश कोटियन और वंशिका

शूलिनी विश्वविद्यालय में मंचतंत्र 2k24, एक अंतर-विभागीय प्रतियोगिता का 14वां संस्करण संपन्न हुआ, जिसमें लिबरल आर्ट्स और आध्यात्मिक विज्ञान संकाय समग्र विजेता के रूप में उभरे।

मंचतंत्र ने कृषि, इंजीनियरिंग, लिबरल आर्ट्स, फार्मास्युटिकल साइंसेज, बायोटेक्नोलॉजी और प्रबंधन सहित विभिन्न स्कूलों के छात्रों और शिक्षकों की विविध प्रतिभाओं का जश्न मनाया। तीन दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन चांसलर प्रो. पी. के. खोसला ने किया, जिसमें कई आकर्षक प्रदर्शनों के लिए मंच तैयार किया गया।

लिबरल आर्ट्स संकाय, जो समग्र विजेता के रूप में उभरा, इसने ग्रुप मेडले, युगल नृत्य, एंकरिंग और लोक नृत्य जैसी कई श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इसने फैशन शो, फ्लैशमॉब और युगल गीत प्रतियोगिताओं में उपविजेता स्थान भी हासिल किया। बेसिक साइंसेज और कृषि संकाय को युगल गीत और फ्लैशमॉब में जीत सहित विभिन्न खंडों में मजबूत प्रदर्शन करते हुए समग्र उपविजेता नामित किया गया। प्रबंधन विज्ञान संकाय ने बॉलीवुड नृत्य में अपनी जीत से प्रभावित किया, जबकि स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी ने स्टैंड-अप कॉमेडी में शीर्ष पुरस्कार जीता और युगल नृत्य में दूसरा स्थान प्राप्त किया। प्रतिभागियों का मूल्यांकन श्रीमती तरुणा मेहता, कुमार ठाकुर, श्री संजू राजपूत और शैलजा नहवत के निर्णायक मंडल द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में संगीत, नृत्य, स्टैंड-अप कॉमेडी और फैशन शो सहित विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन किए गए, जिसमें छात्रों और शिक्षकों दोनों ने प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता की शुरुआत कृषि विज्ञान विद्यालय के प्रदर्शन से हुई, उसके

बाद पहले दिन इंजीनियरिंग विद्यालय ने प्रदर्शन किया। निर्णायकों को युगल नृत्य, समूह गान, हास्य अभिनय, लोक नृत्य और फैशन शो ने विशेष रूप से आकर्षित किया। इंजीनियरिंग के छात्रों ने सेमी-क्लासिकल युगल नृत्य, स्टैंड-अप कॉमेडी और समूह गान प्रदर्शन के साथ अपने कौशल का प्रदर्शन किया, जिससे कार्यक्रम का रोमांच और बढ़ गया। संकाय की भागीदारी ने कार्यक्रम को एक अनूठा आयाम दिया। लिबरल आर्ट्स संकाय सदस्यों इंदु नेगी, मोनिका ठाकुर और विनीत शर्मा को उनके असाधारण प्रदर्शन के लिए प्रशंसा मिली। फार्मास्यूटिकल साइंसेज स्कूल ने भी उल्लेखनीय योगदान दिया, जिसमें संकाय सदस्य सोनिया रानी, निष्ठा डोगरा, शुभांगी सूद, अरुण पराशर और कमलेश ने विभिन्न श्रेणियों में भाग लिया। कार्यक्रम की निदेशिका श्रीमती पूनम नंदा ने कहा, मंचतंत्र 2k24 ने शूलिनी विश्वविद्यालय के छात्रों और संकाय की ऊर्जा और रचनात्मकता को समाहित किया, जिसमें प्रत्येक विभाग ने एक अविस्मरणीय अनुभव में योगदान दिया है।

मीडिया के छात्रों ने राष्ट्रीय पुरस्कार से परचम लहराया

एसएनएल टीम

बैचलर्स ऑफ जर्नलिज्म एंड मास मीडिया के अंतिम वर्ष के छात्रों ने आपदा प्रबंधन से संबंधित लघु फिल्मों पर राष्ट्रीय पुरस्कार जीतकर विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है।

छात्रों द्वारा पुरस्कार विजेता फिल्म, जिसका नाम 'समेज से सबक़' है, को केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान द्वारा विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा तीसरी सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म घोषित किया गया था।

यह पुरस्कार केंद्रीय पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत द्वारा अंतर्राष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण दिवस पर नई दिल्ली के डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित एक शानदार समारोह में प्रदान किया गया।

सहायक प्रोफेसर पार्थ शर्मा के निर्देशन में बनी यह फिल्म हिमाचल प्रदेश में भूस्खलन और बाढ़ से संबंधित प्राकृतिक आपदा पर केंद्रित थी। इसने प्रकृति की के संरक्षण की आवश्यकता और ऐसी प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए उठाए जाने वाले कदमों पर प्रकाश डाला।

लघु फिल्म में हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुखविंदर सिंह 'सुक्खू' का साक्षात्कार शामिल था और इसमें पिछले साल राज्य में हुए बड़े पैमाने पर भूस्खलन के दृश्य थे।

पालकी ने 'तानसेन की खोज' प्रतियोगिता में बाजी मारी

वंशिका

परिसर में आयोजित ञतानसेन की खोजञ प्रतियोगिता में बेसिक साइंस संकाय से पालकी विजेता बनीं और लिबरल आर्ट्स संकाय से हर्ष वर्धन ने दूसरा स्थान हासिल किया।

शाम की शुरुआत देशभक्ति के उत्साह के साथ हुई, जिसकी शुरुआत राष्ट्रगान से हुई और उसके बाद भावपूर्ण कविता पाठ हुआ। इसके बाद मंच पर एकल और समूह गायन, ऊर्जावान समूह नृत्य, जैज़ धुन और यहां तक कि एक जीवंत भोजपुरी समूह नृत्य सहित मनमोहक प्रदर्शनों की एक श्रृंखला के साथ आग लगा दी गई। इस कार्यक्रम में एनएसएस समूह द्वारा रैप प्रदर्शन और एक फैशन शो भी दिखाया गया।

शाम का एक और मुख्य आकर्षण ञमिस्टर एंड मिस कल्चरलञ प्रतियोगिता थी। प्रतियोगियों ने अपने व्यक्तित्व और शैली का प्रदर्शन करते हुए, अपनी सुंदरता और आत्मविश्वास

के साथ रैंप पर वॉक किया।

कठोर मूल्यांकन प्रक्रिया के बाद, प्रबंधन और विज्ञान संकाय से निधाल मंजूर को मिस्टर कल्चरल का ताज पहनाया गया, जबकि कानूनी विज्ञान संकाय और स्कूल ऑफ लॉ से सुहाना शान को मिस कल्चरल के खिताब से नवाजा गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम एक शानदार सफलता थी, जिसने छात्रों को अपनी रचनात्मकता व्यक्त करने और अपनी सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच प्रदान किया। यह संगीत, नृत्य और सौहार्द से भरी एक यादगार शाम थी।

स्थापना दिवस पर शैक्षणिक उत्कृष्टता का उत्सव मनाया गया

अपूर्वा मिसल

शूलिनी विश्वविद्यालय ने अपने 15वें स्थापना दिवस को बड़े उत्साह के साथ मनाया, जिससे 2009 में स्थापित होने के बाद से एक और महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल हुआ। इस अवसर पर छात्र और वरिष्ठ प्रशासक शामिल हुए, और विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों और कैंपस की विविधता का जश्न मनाया गया।

समारोह की शुरुआत राग रंग सदस्यों द्वारा सरस्वती वंदना से हुई, जिसमें ज्ञान और बुद्धि के आशीर्वाद का आह्वान किया गया। इसके बाद, एक पारंपरिक हवन का आयोजन हुआ जो कि एक वार्षिक परंपरा है और एकता एवं सफलता का प्रतीक माना जाता है।

संस्थापक और कुलाधिपति प्रो. पीके खोसला ने सभा को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य साझा किया। उन्होंने बताया कि शूलिनी विश्वविद्यालय अब भारत के प्रमुख निजी विश्वविद्यालयों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुका है।

प्रो-चांसलर श्री विशाल आनंद ने विश्वविद्यालय की स्थापना के दौरान आई चुनौतियों और उनके अनुभवों पर प्रकाश डाला। उन्होंने दिवंगत पूर्व राष्ट्रपति और प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के साथ हुई बातचीत से मिली सीख साझा की, जिसमें उन्होंने अनुसंधान-आधारित शिक्षा और व्यावहारिक अनुप्रयोगों के महत्व पर जोर दिया था। सस्टेनेबिलिटी और कम्युनिटी एंगेजमेंट निदेशक श्रीमती पूनम नंदा ने नए 'बडी रेफरल प्रोग्राम' की घोषणा की और छात्रों को इसमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके साथ कपिल गुप्ता, नमन शर्मा और अपूर्वा ने भी इस प्रोजेक्ट को प्रमोट किया।

इन्वोवेशन्स और लर्निंग के निदेशक श्री अशिष खोसला ने सृजनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के महत्व पर जोर दिया। कार्यक्रम के हिस्से के रूप में एक लकी ड्रॉ भी आयोजित किया गया, जिसमें आकर्षक पुरस्कार दिए गए। इसमें ऋषभ शर्मा, धरम राज, आयुष कुमार, और बसंत सिंह को वनप्लस फोन प्रदान किए गए, जबकि मुख्य पुरस्कार के रूप में खुशबू शर्मा को आईफोन मिला।

समारोह में स्थानीय भोजन 'धाम' का भी आयोजन किया गया, जिसका आनंद सभी ने उठाया।

समापन में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें छात्रों ने जीवंत प्रस्तुतियां दीं, जो शूलिनी विश्वविद्यालय के मुख्य मूल्यों को उजागर करती हैं।

ताशकंद में डॉ. राधा का शानदार प्रदर्शन

एसएनएल टीम

शूलिनी विश्वविद्यालय के बॉटनी विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. राधा ने ताशकंद, उज्बेकिस्तान में आयोजित आठवें वर्ल्ड कॉटन रिसर्च कॉन्फ्रेंस (WCRC-8) में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस सम्मेलन का उद्घाटन उज्बेकिस्तान के प्रधानमंत्री द्वारा किया गया था, और इसमें विश्वभर से कपास अनुसंधान के विशेषज्ञ शामिल हुए।

अपने शोध प्रस्तुति के अलावा, डॉ. राधा ने कपास से बने शिल्प प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके साथ ही उन्होंने हिमाचली संस्कृति को प्रदर्शित करते हुए पारंपरिक पोशाक प्रतियोगिता में भी प्रथम पुरस्कार जीता। इन

उपलब्धियों के लिए उन्हें कुल $300 की राशि प्राप्त हुई।

डॉ. राधा ने बताया कि इस सम्मेलन में अकादमिक और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से उन्होंने विश्वविद्यालय को मान्यता दिलाने के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को भी बढ़ावा दिया।

सदियों से, समाज ने पुरुषों की छवि मजबूत, चुप रहने वाले लोगों की तरह बनाई है

ताकत का मतलब है, भावनाओं का सामना करने और उन्हें व्यक्त करने का साहस

गेस्ट कॉलम

अनमोल मल्होत्रा

ऐसी दुनिया में जहाँ पुरुषों से की जाने वाली अपेक्षाएँ अक्सर उनके द्वारा उठाए जाने वाले बोझ जितनी ही भारी होती हैं, एक बातचीत लंबे समय से दबी हुई हैः मानसिक स्वास्थ्य के बारे में। सदियों से, समाज ने पुरुषों की छवि मजबूत, चुप रहने वाले लोगों की तरह बनाई है- एक दृढ़ व्यक्ति जो बिना किसी शिकायत के अपनी समस्याओं को अपने कंधों पर उठा लेता है। लेकिन कठोरता के इस आवरण के नीचे एक और जटिल वास्तविकता छिपी हुई है- जिसमें मानसिक स्वास्थ्य के साथ संघर्ष महिलाओं की तुलना में पुरुषों में उतना ही व्यापक है, जितना कि अधिक।

अधिकांश लड़के कम उम्र से ही अपनी भावनाओं को दबाना सीख जाते हैं: 'मर्द बनो' या 'लड़के रोते नहीं हैं' उनके दिमाग में एक खास कहानी बन जाती है कि कमज़ोरी दिखाना कमज़ोरी है। सांस्कृतिक अपेक्षा का यह संस्करण वास्तव में पुरुषों को मदद लेने से न केवल हतोत्साहित करता है, बल्कि उन्हें सब कुछ आंतरिक रूप से स्वीकार करने के लिए प्रेरित भी करता है, जिससे एक खतरनाक चुप्पी पैदा होती है।

यह कलंक पुरुषों के लिए विशेष रूप से शक्तिशाली है। जबकि महिलाएँ, समय के साथ, अपने मानसिक स्वास्थ्य के बारे में अधिक खुलकर बात करने लगी हैं, पुरुष आम तौर पर पृष्ठभूमि में रहते हैं। ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि वे कम संघर्ष करते हैं, बल्कि इसलिए क्योंकि उन्हें कमतर पुरुष समझे जाने का डर होता है। इसका परिणाम एक मानसिक स्वास्थ्य संकट है जो अदृश्य होते हुए भी वास्तविक है।

पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य के आँकड़े निराशाजनक हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लिए मदद लेने की संभावना पुरुषों की तुलना में महिलाओं की तुलना में कम है, फिर भी आत्महत्या से उनकी मृत्यु की संभावना अधिक है। कई देशों में, पुरुष महिलाओं की तुलना में तीन से चार गुणा अधिक बार आत्महत्या करते हैं। ये संख्याएँ पुरुषों की स्थायी चुप्पी के लिए जीवन की कीमत चुकाने के लिए कार्रवाई का आह्वान करती हैं।

पुरुषों में अवसाद, चिंता और मादक द्रव्यों के सेवन की भी समस्या है, हालाँकि इनकी रिपोर्ट कम की जाती है। कई पुरुष अपने मानसिक स्वास्थ्य को और खराब करने के लिए शराब या ड्रग्स का सहारा लेते हैं। पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य के विषय पर चुप्पी पुरुषों को मदद लेने से रोकती है और पीड़ा के एक चक्र को जारी रखती है जो घातक हो सकता है।

तो, इस कहानी को बदलने के लिए क्या किया जाना चाहिए? पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बातचीत को सामान्य बनाना पहला कदम होगा। जितना हमने मानसिक स्वास्थ्य के साथ सामान्य संघर्षों से कलंक को दूर करने की कोशिश की है, हमें यह संदेश देने की ज़रूरत है कि भावनाएँ, मदद माँगना और भेद्यता पुरुषों के लिए वर्जित नहीं हैं।

> **01 | पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य के विषय पर चुप्पी पुरुषों को मदद लेने से रोकती है और पीड़ा के एक चक्र को जारी रखती है जो घातक हो सकता है।**

> **02 | एक ऐसे समाज को सक्षम बनाना जहाँ स्कूल, कार्यस्थल और समुदाय किसी को भी उसके मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बात करने के लिए जज न करें।**

यह सब शिक्षा के बारे में है, एक ऐसे समाज को सक्षम बनाना जहाँ स्कूल, कार्यस्थल और समुदाय किसी को भी उसके मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बात करने के लिए जज न करें। पुरुषों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की अनुमति दी जानी चाहिए और यदि आवश्यक हो, तो बिना जज किए मदद माँगनी चाहिए। मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियानों में पुरुषों को लक्षित करने की सख्त ज़रूरत है ताकि वे जिन अनोखी समस्याओं से गुज़रते हैं, उन्हें संबोधित किया जा सके और प्रासंगिक संसाधन उपलब्ध कराए जा सकें।

दूसरा महत्वपूर्ण कारक सहायता नेटवर्क है, जिसमें मित्र, परिवार और प्रियजन शामिल हैं। वे पुरुषों को अपने व्यक्तिगत मुद्दों के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। कभी-कभी, पीड़ित की बात सुनकर और बिना जजमेंट के उसे आराम देकर उसे ज़रूरी मदद देने के लिए सिर्फ़ एक व्यक्ति की ज़रूरत होती है। देखभाल बिना शर्त और आरामदायक और सुरक्षित तरीके से होनी चाहिए।

जबकि मानसिक स्वास्थ्य से लड़ने में थेरेपी सबसे मूल्यवान उपकरणों में से एक है, कई पुरुष कमज़ोर समझे जाने के डर से इससे बचते हैं। पेशेवर चिकित्सक भावनाओं पर चर्चा करने और उन अंतर्निहित मुद्दों के बारे में जानने के लिए एक आरामदायक जगह प्रदान करते हैं जिन पर ध्यान देने की ज़रूरत है। थेरेपी तनाव से निपटने के स्वस्थ तरीके विकसित करने में मदद करती है। सबसे खास बात यह है कि पुरुषों के लिए बनाए गए सहायता समूह एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। इससे ऐसा माहौल मिलता है, जिसमें पुरुषों को भाईचारे का हिस्सा होने का अहसास होता है और इस तरह वे अपने अनुभवों को दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं, जो समझते हैं कि वे किस दौर से गुज़र रहे हैं।

यह इस बारे में है कि पुरुष होने का सही अर्थ क्या है। ताकत का मतलब कोई भावना न होना नहीं है, बल्कि उनका सामना करने और उन्हें व्यक्त करने का साहस है। भेद्यता कोई कमज़ोरी नहीं है, बल्कि वह ताकत है जो जुड़ाव और उपचार को बढ़ावा देती है।

यह समय से परे है कि हम, एक समाज के रूप में, पुरुषत्व की सांस्कृतिक रूप से आधारित अभिव्यक्तियों से आगे बढ़ें, जो कि संयम और कल्याण के बीच संतुलन में लटकी हुई लगती हैं। तभी हम एक सांस्कृतिक माहौल का पोषण कर सकते हैं, जिसमें पुरुष ज़रूरत पड़ने पर मदद लेने और पूर्ण, स्वस्थ जीवन जीने के माध्यम से अपने मानसिक स्वास्थ्य की ज़िम्मेदारी लेने के लिए पर्याप्त रूप से सशक्त महसूस करेंगे।

पुरुषों का मानसिक स्वास्थ्य एक मौन संघर्ष बना हुआ है, ऐसा वास्तव में होना ज़रूरी नहीं है। इसमें चुप्पी तोड़ना, कलंक को तोड़ना, एक ऐसा स्थान बनाना शामिल है जहाँ पुरुष भावनात्मक रूप से खुद को व्यक्त करने के लिए सुरक्षित हों। हमें इस संकट को तोड़ना चाहिए और पहला कदम उठाना चाहिए। जरूरत इस बात की है कि मनुष्य होने की परिभाषा को पुनः परिभाषित किया जाए - इतना मजबूत कि वह कमजोर हो सके, इतना बुद्धिमान कि वह मदद मांग सके, इतना साहसी कि वह प्रामाणिक रूप से जीवन जी सके।

हमारा ध्यान और दृष्टिकोण ऐसे छात्रों को तैयार करना है जो समाज में योगदान दे सकें

शिक्षा के भविष्य को आकार देता... लिबरल आर्ट्स

आमने सामने

रिया ठाकुर

जैसे-जैसे लिबरल आर्ट्स शिक्षा अधिक लोकप्रिय होती जा रही है, ह*मने शूलिनी विश्वविद्यालय में चित्रकूट स्कूल ऑफ़ लिबरल आर्ट्स की एसोसिएट प्रोफेसर और प्रमुख डॉ. पूर्णिमा बाली* से स्कूल के लिए उनके दृष्टिकोण और आज के समाज में लिबरल आर्ट्स की भूमिका के बारे में बात की। एक विस्तृत बातचीत में, डॉ. पूर्णिमा बाली ने सांस्कृतिक संरक्षण से लेकर स्नातकों के लिए कैरियर की संभावनाओं तक हर चीज़ पर अपने विचार साझा किए।

Q. क्या आप शिक्षा जगत में अपनी यात्रा के बारे में बता सकती हैं और आपको शूलिनी विश्वविद्यालय में शामिल होने के लिए कैसे प्रेरणा मिली?

मैंने शुरू में शिक्षक बनने के इरादे से वाणिज्य में डिग्री हासिल की। हालाँकि, बाद में मुझे एहसास हुआ कि वाणिज्य मेरे लिए सही नहीं था। अपने पिता, श्री जी एस बाली से प्रेरित होकर, जो हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में टॉपर रहे थे, मैंने साहित्य की ओर रुख किया। मैंने साहित्य में अपनी मास्टर्स और पीएच डी पूरी की। 2017 में, मैं अंग्रेजी साहित्य में सहायक प्रोफेसर के रूप में शूलिनी विश्वविद्यालय में शामिल हो गई। समय के साथ, मैं एसोसिएट प्रोफेसर की भूमिका में आगे बढ़ती गई और 2021 में मुझे स्कूल का प्रमुख नियुक्त किया गया। एक छात्र से शिक्षक बनने और फिर नेतृत्व की स्थिति संभालने तक यह एक संतुष्टिदायक यात्रा रही है। उदार कला के क्षेत्र में एक विविध टीम का नेतृत्व करना मेरे लिए एक शानदार अनुभव रहा है।

Q. आपको अंग्रेजी साहित्य में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए किसने प्रेरित किया?

जब मैं छोटी थी, तो मुझे अंग्रेजी साहित्य का शौक था। मेरा घर किताबों से भरा रहता था क्योंकि मेरे पिता साहित्य के शौकीन थे। मैं हर तरह की कहानियाँ और उपन्यास पढ़ती थी। एक दिन मेरे पिता ने पूछा कि क्या मैं साहित्य की ओर आकर्षित हूँ। मैंने हाँ में उत्तर दिया और उन्होंने इसे अपने अध्ययन के क्षेत्र के रूप में आगे बढ़ाने के मेरे निर्णय का समर्थन किया। मैं भाग्यशाली था कि हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में मेरी पर्यवेक्षक के रूप में सबसे अच्छी शिक्षिका प्रो. नीलिमा कंवर थीं, जिन्होंने मेरे शोध कौशल को मजबूत किया और प्रो. तेज एन धर जिन्हें मैं शूलिनी में अपना गुरु मानता हूँ। मेरे जीवन में ये तीन लोग अंग्रेजी साहित्य में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए मेरी प्रेरणा हैं।

01 | जब मैं छोटी थी, तो मुझे अंग्रेजी साहित्य का शौक था। मेरा घर किताबों से भरा रहता था क्योंकि मेरे पिता साहित्य के शौकीन थे। मैं हर तरह की कहानियाँ और उपन्यास पढ़ती थी।

02 | हमारा उद्देश्य चित्रकूट स्कूल ऑफ़ लिबरल आर्ट्स को एक ऐसे संस्थान के रूप में आकार देना है, जिसे दूसरे लोग आदर्श मान सकें।

Q. शूलिनी विश्वविद्यालय में चित्रकूट स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स के लिए आपका क्या दृष्टिकोण है?

हर विभाग और स्कूल का लक्ष्य भविष्य में, मान लीजिए 2030 या 2050 तक, एक वैश्विक संस्थान बनाना है। हम भी यही चाहते हैं, लेकिन लिबरल आर्ट्स की शिक्षा सिर्फ़ हर समय शीर्ष पर रहने के बारे में नहीं है; हमारा ध्यान और दृष्टिकोण ऐसे छात्रों को तैयार करना है जो समाज में योगदान दे सकें। हमारे विषय इस बात पर ज़ोर देते हैं कि साहित्य जीवन को दर्शाता है, हम कैसे व्यवहार करते हैं और कैसे संवाद करते हैं। हमारा उद्देश्य चित्रकूट स्कूल ऑफ़ लिबरल आर्ट्स को एक ऐसे संस्थान के रूप में आकार देना है, जिसे दूसरे लोग आदर्श मान सकें।

Q. आप अगले कुछ वर्षों में लिबरल आर्ट्स की भूमिका को किस तरह से विकसित होते हुए देखती हैं?

अब तक, हम एक कोकून में रहे हैं, अपना खुद का शोध कर रहे हैं और अपने खुद के सत्र चला रहे हैं। हालाँकि, हमने हाल ही में CELL नामक एक नया केंद्र शुरू किया है, जिसका मतलब है भाषा सीखने के लिए उत्कृष्टता केंद्र। अब हमारा लक्ष्य अन्य विभागों और विषयों तक अपनी पहुँच का विस्तार करना है। मैं विभिन्न क्षेत्रों में लिबरल आर्ट्स की अधिक भागीदारी देखना चाहूँगी। मैं विश्वविद्यालय की पहचान एक लिबरल आर्ट्स संस्थान के रूप में देखना चाहती हूँ।

Q. आप क्या मानते हैं कि छात्रों को अंग्रेजी पढ़ने से कौन से आवश्यक कौशल हासिल करने चाहिए?

एक छात्र के रूप में, साहित्य, राजनीति विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र और विदेशी भाषाओं में ज्ञान प्राप्त करना महत्वपूर्ण है। चाहे आप किसी भी क्षेत्र में रुचि रखते हों, विषय की व्यापक समझ होना महत्वपूर्ण है। हमारे स्कूल में, हम समाज के बारे में व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए अंग्रेजी साहित्य, इतिहास और राजनीति विज्ञान जैसी विभिन्न धाराएँ प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, हम छात्रों को वैश्विक दृष्टिकोण रखने और दुनिया भर में अवसरों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए विदेशी भाषा पाठ्यक्रम भी प्रदान करते हैं।

Q. वर्तमान में स्कूल में संकाय सदस्यों द्वारा अनुसंधान के कौन से क्षेत्र अपनाए जा रहे हैं?

हम स्कूल में विविध शोध कर रहे हैं, जिसका प्राथमिक लक्ष्य भारत की संस्कृति को संरक्षित करना है। हमारे काम के उदाहरणों में मानवतावाद, सांस्कृतिक अध्ययन, नारीवाद, विकलांगता अध्ययन, फिल्म अध्ययन, उपनिवेशवाद के बाद, अंतर्राष्ट्रीय संबंध और विश्व साहित्य शामिल हैं। एक उदाहरण बिलासपुर के कोहलूर क्षेत्र के गीतों का अनुवाद करना हो सकता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक हर अवसर के लिए एक गीत है। जब बच्चा पैदा होता है, तो गाँव की महिलाएँ गाने के लिए इकट्ठा होती हैं और ऐसा ही शादियों के दौरान भी होता है। हमारा मानना है कि शोध के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना महत्वपूर्ण है और हम इन गीतों का अंग्रेजी में अनुवाद करने पर काम कर रहे हैं, ताकि उन्हें दुनिया के साथ साझा किया जा सके।

Q. अंग्रेजी और उदार कला में स्नातक और स्नातकोत्तर के लिए कैरियर की क्या संभावनाएं हैं

जब हम स्नातक (UG) छात्रों के बारे में बात करते हैं, तो यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि उनमें से कई तुरंत कैरियर चुनने के बजाय उच्च अध्ययन करते हैं। अपने UG को पूरा करने के बाद, कुछ साहित्य के छात्र कॉपीराइटर या कंटेंट राइटर बन जाते हैं। अपने UG के बाद, छात्र B.Ed कर सकते हैं या अपनी मास्टर डिग्री शुरू कर सकते हैं, फिर राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) दे सकते हैं और अंततः Ph.D पूरी कर सकते हैं। प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी करना भी उनके करियर विकल्पों में से एक है।

'अवसरों के ऊँचाइयों' की ओर

फर्स्ट पर्सन

कशिश कोटियन*

जब मैं बॉम्बे की चहल-पहल भरी सड़कों से बाहर निकला, जहाँ समुद्र तटों का नज़ारा और तटीय हवा की गर्माहट थी, तो मैं अपने नए गंतव्य के बारे में आशंकित महसूस करने से खुद को नहीं रोक पाया। राजसी हिमालय में बसा शूलिनी विश्वविद्यालय, मेरे एकमात्र घर से बहुत दूर था, जिसे मैं कभी जानता था।

शहर की तेज़-रफ़्तार की लय को शांत पहाड़ों के लिए बदलने का विचार, जहाँ हवा ठंडी थी और परिदृश्य नाटकीय रूप से अलग था, ने मुझे डरा दिया। क्या मैं जीवन की धीमी गति के साथ तालमेल बिठा पाऊँगा? यह बड़ा सवाल था क्योंकि मैं पहाड़ियों की खामोशी को किनारे पर टकराने वाली लहरों की आवाज़ की जगह

ले रहा था। लेकिन जब मैंने शूलिनी विश्वविद्यालय के परिसर में कदम रखा, जो ऊंचे-ऊंचे चीड के पेड़ों और राजसी पहाड़ों से घिरा हुआ था, तो शुरुआती संस्कृति के झटके ने आकर्षण का मार्ग प्रशस्त किया। विश्वविद्यालय के शांत वातावरण और लुभावने दृश्यों ने मुझे घेर लिया, और मुझे अप्रत्याशित शांति का एहसास हुआ। मेरे पहले सेमेस्टर में अभी एक महीना ही बीता है और मेरे सारे संदेह दूर हो गए हैं। शूलिनी ने मुझे न केवल पहाड़ों की खूबसूरती दिखाई, बल्कि ₹अवसरों का पहाड़₹ भी दिखाया, जो मेरी उम्मीदों से बढ़कर व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है। मैं यूनिवर्सिटी मैराथन को कवर करने के लिए रोमांचित था, जो न्यूज़लैटर के पहले पन्ने पर छपा और एक लेखक और एक नवोदित पत्रकार के रूप में मेरी शुरुआत हुई। इसके बाद, मुझे सेंटर फॉर कोचिंग लीडरशिप के लॉन्च इवेंट में शामिल होने और उसके बारे में जानकारी देने का मौका मिला। इस पहल का उद्देश्य भविष्य के नेताओं को तैयार करना था और मैं पैनल चर्चाओं और सम्मानित मेहमानों से प्रेरित था। मुझे NAAC निरीक्षण के दौरान हमारे पत्रकारिता विभाग का प्रतिनिधित्व करने का भी सम्मान मिला। इस अनुभव ने मुझे हमारे विभाग की क्षमताओं को प्रदर्शित करने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शूलिनी की प्रतिबद्धता के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त करने का मौका दिया। मुझे पिंक अक्टूबर, एक स्तन कैंसर जागरूकता पहल के लिए सामग्री बनाने का भी काम सौंपा गया, जहाँ मुझे स्वयंसेवक बनने और इस महत्वपूर्ण कारण में योगदान देने का मौका मिला। इतने सारे लोगों के जीवन को छूने वाली किसी चीज़ का हिस्सा बनना सम्मान की बात थी। कक्षा में एक अपरंपरागत लेकिन गहन अभ्यास विशेष रूप से उल्लेखनीय था - अपना स्वयं का मृत्युलेख लिखना। इस विचारोत्तेजक गतिविधि ने मुझे अपनी नश्वरता का सामना करने, प्राथमिकताओं का पुनर्मूल्यांकन करने और अपने लक्ष्यों को अपने मूल्यों के साथ संरेखित करने के लिए मजबूर किया। जैसे-जैसे मैंने अपनी विरासत लिखी, मुझे एहसास हुआ कि वास्तव में क्या मायने रखता है: अपने शब्दों के माध्यम से एक स्थायी प्रभाव डालना, दूसरों को प्रेरित करना और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना। यह आत्मनिरीक्षण यात्रा मेरी आशंकाओं को दूर करने और अनिश्चितता को आत्मविश्वास से बदलने की अंतिम प्रेरणा थी।

मैंने सोलन के विचित्र शहर की खोज की, इसकी घुमावदार सड़कें, पुरानी दुकानें और गर्मजोशी से भरे स्थानीय लोग। मैंने ट्रेकिंग ट्रेल्स, पास में एक झरना देखा जो मुझे घर वापस आने का थोड़ा सा एहसास और आराम देता है और सुंदर दृश्य भी। संकाय के अटूट समर्थन ने मुझे बदलाव के दौरान मार्गदर्शन किया, जिससे समायोजन मेरी कल्पना से कहीं अधिक आसान हो गया।

कक्षा से परे, मुझे विश्वविद्यालय के जीवंत समुदाय और क्लबों में सांत्वना मिली। विविध पृष्ठभूमियों से आए साथी छात्रों ने अपनी यात्रा की कहानियाँ साझा कीं, जिससे मुझे एहसास हुआ कि मैं अकेला नहीं हूँ और बदलाव बड़े होने का एक महत्वपूर्ण पहलू है और यह जीवन का एक हिस्सा है। हम जितनी जल्दी इसे अपना लेंगे उतना ही बेहतर होगा। पहाड़ मुझे घर जैसा लगने लगे हैं और मैं धुंध भरी सुबह और सितारों से भरी रातों की सराहना करने लगा हूँ। पहाड़, हालांकि डरावने थे, लेकिन एक अभयारण्य बन गए, जो मुझे याद दिलाते हैं कि विकास अक्सर हमारे आराम क्षेत्र से परे होता है।

*(लेखक पत्रकारिता और जनसंचार स्नातक के सेमेस्टर 1 के छात्र हैं)

शोध के प्रति प्रेम उन्हें शूलिनी ले आया

लघु भारत — मुंबई

अपूर्वा मिसाल

"मैं आने वाले वर्षों के लिए उत्साहित हूँ और शूलिनी विश्वविद्यालय ने मेरे जीवन में जो मूल्य जोड़े हैं, उसके लिए आभारी हूँ," मुंबई के रहने वाले स्कूल ऑफ़ फ़िज़िक्स के दूसरे वर्ष के छात्र लोपेश मिश्रा कहते हैं।

2023 में, कई प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के लिए केंद्रीय विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा देने के बाद, उन्होंने अपनी असाधारण रैंकिंग और प्रतिष्ठा के लिए शूलिनी विश्वविद्यालय को चुना। दो साल बाद, शोध के प्रति उनका जुनून काफी बढ़ गया है और वे शूलिनी के शांत वातावरण को हिमाचल प्रदेश के जीवन के अनुकूल होने में मदद करने का श्रेय देते हैं।

पूर्व राज्य स्तरीय अंडर-14 फुटबॉल खिलाड़ी, लोपेश

दो साल बाद, शोध के प्रति उनका जुनून काफी बढ़ गया है और वे शूलिनी के शांत वातावरण को हिमाचल प्रदेश के जीवन के अनुकूल होने में मदद करने का श्रेय देते हैं।

विश्वविद्यालय की फुटबॉल टीम में शामिल हुए और अपने कौशल को निखारने के लिए कई टूर्नामेंटों में भाग लिया। शिक्षाविदों के अलावा, शूलिनी ने उन्हें लंबी पैदल यात्रा, स्वतंत्र जीवन और मानव व्यवहार का अवलोकन करने सहित मूल्यवान जीवन के सबक सिखाए हैं।

लोपेश की पारिवारिक पृष्ठभूमि विज्ञान में है, उनके पिता एक शोध वैज्ञानिक थे और उनके परदादा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति रह चुके हैं। पृष्ठभूमि ने उन्हें इसी तरह के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया। वह विश्वविद्यालय के सहायक संकाय और व्यावहारिक, हाथों-हाथ सीखने की सराहना करते हैं, जिसने उनके दिमाग को आकार दिया है। उन्होंने कहा कि उन्हें शुरुआती दिनों में मुंबई में जीवन की व्यस्त गति से शांत वातावरण में समायोजित होने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने कहा कि इस अनुभव ने उन्हें अधिक स्वतंत्र बना दिया है और उनके व्यक्तित्व को विकसित करने में मदद की है। वह शूलिनी समुदाय के लिए योगदान देने और निकट भविष्य में एक शोध वैज्ञानिक बनने के अपने सपने को साकार करने के लिए उत्सुक हैं।

नेपाल से सपनों को साकार करने के लिए

नेपाल — सीमा पार

जिया लोहिया

नेपाल के अपने गृहनगर ललितपुर में रहते हुए, प्रीतक थापा ने शूलिनी विश्वविद्यालय में अपने सपनों को साकार करने का फैसला किया। वह भारत सरकार के स्टडी इन इंडिया (SII) छात्रवृत्ति के तहत शूलिनी विश्वविद्यालय में अध्ययनरत एक बी.टेक छात्र है। प्रीतक ने शूलिनी को इसकी शैक्षणिक उत्कृष्टता, सुंदर परिदृश्य और मैत्रीपूर्ण वातावरण के लिए चुना। मिलनसार संकाय की सराहना करते हुए उन्होंने कहा, ₹प्रोफेसर मदद करने के लिए बहुत इच्छुक हैं।₹ प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से साइबर सुरक्षा और हैकिंग के लिए उनका जुनून उनकी पढ़ाई को प्रेरित करता है। एक उत्साही खिलाड़ी

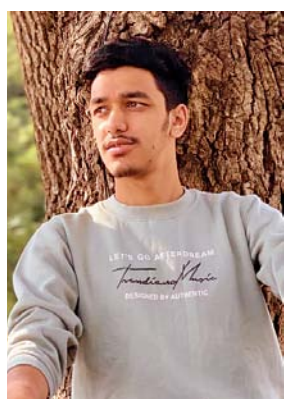

शुरुआत में दोस्त बनाने में चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, उन्होंने इस स्वागत करने वाले समुदाय में सार्थक संबंध बनाए हैं।

होने के नाते, वह विश्वविद्यालय की फुटबॉल टीम के लिए खेलते हैं, जो उन्हें पढ़ाई और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच संतुलन बनाने में मदद करता है। प्रीतक को रविवार को दोस्तों के साथ साइकिल चलाना भी पसंद है। हालाँकि उन्हें शुरू में हिंदी बोलने में दिक्कत हुई, लेकिन उनके बेहतर भाषा कौशल ने सामाजिक मेलजोल को आसान बना दिया है, जिससे उन्हें भारतीय व्यंजन, विशेष रूप से आलू परांठा पसंद है। शूलिनी का पाइन कोर्ट पूरे विश्वविद्यालय में उनका पसंदीदा स्थान रहा है और उन्हें नई AI बिल्डिंग और लाइब्रेरी में पढ़ना पसंद है। विश्वविद्यालय के आसपास शाम की सैर एक शांतिपूर्ण विश्राम प्रदान करती है। शुरुआत में दोस्त बनाने में चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, उन्होंने इस स्वागत करने वाले समुदाय में सार्थक संबंध बनाए हैं। शूलिनी विश्वविद्यालय में प्रीतक थापा की यात्रा भारत में अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए उपलब्ध समृद्ध अनुभवों का उदाहरण है, जो अकादमिक कठोरता और सांस्कृतिक विसर्जन के मिश्रण को उजागर करती है।

'हर छात्र शूलिनी अनुभव का हकदार है'

यादों में

अंगू सांचू*

हिमाचल आने से पहले, जीवन अप्रत्याशित लगता था, जैसे कि मैं बिना किसी स्पष्ट दिशा के लगातार आगे बढ़ रहा था। यह अनिश्चितता ही थी जिसने मुझे हिमाचल में ला खड़ा किया, एक ऐसी जगह जिसके लिए मैंने योजना नहीं बनाई थी, लेकिन अब मैं अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता।

लोग अक्सर पूछते हैं कि मैंने हिमाचल को क्यों चुना, जबकि मेरे पास अपने करियर को आगे बढ़ाने के लिए बड़े शहरों में अन्य विकल्प थे। मेरे परिवार को भी इसी तरह की चिंताएँ थीं। लेकिन पीछे मुड़कर देखने पर, मैं अपने फैसले के बारे में और अधिक आश्वस्त हो सकता हूँ। जबकि कई लोगों का मानना है कि आपको बड़े-बड़े संस्थानों को प्राथमिकता देनी चाहिए, मुझे लगता है कि सबसे अच्छा विकल्प वह है, जो आपको सही लगे। मेरे लिए, शूलिनी बिल्कुल वैसी ही थी: बढ़ने, सीखने और अपना शांत होने के लिए एकदम सही जगह।

अपनेपन की भावना मेरे विभाग में मिलने वाली लड़कियों के अद्भुत समूह से शुरू हुई। हम सभी अलग-अलग जगहों से आए थे, प्रत्येक का अपना दृष्टिकोण था और किसी तरह जीवन ने हमें एक साथ ला दिया। हमारी कक्षा में वह विविधता जीवन की अपनी रचना की तरह महसूस हुई, जिसने हमें न केवल अकादमिक बल्कि जीवन के बारे में सिखाने के लिए अलग-अलग अनुभवों को बुना। मैंने ऐसी चीजें सीखीं जो पाठ्य पुस्तकों से कहीं आगे थीं—व्यावहारिक जीवन कौशल, लचीलापन, समझ। और मैं हमेशा अपने प्रोफेसरों को सिर्फ शिक्षक से अधिक होने के लिए देखूंगा; वे हर

मायने में संरक्षक थे, जो हमें सिर्फ कोर्सवर्क से कहीं अधिक मार्गदर्शन देते थे। हिमाचल ने मुझे जो सबसे बड़ा उपहार दिया, वह था समय—सोचने का, चिंतन करने का, बढ़ने का समय। कोई जल्दबाजी नहीं थी, कोई दबाव नहीं था। उस शांति में, मुझे अपना रास्ता निकालने, यह समझने की जगह मिली कि मैं क्या बन रहा हूं। हिमाचल की गति ने मुझे धीमा होना, विचारों को अपने समय पर खुलने देना सिखाया। यह वह शांति थी जिसने मुझे अपने करियर विकल्पों को तलाशने, जीवन को एक ऐसी स्पष्टता के साथ देखने की अनुमति दी, जो मुझे पहले नहीं पता थी। पीछे मुड़कर देखता हूं, तो यादें शांति से लिपटी हुई हैं। जब भी मैं कैंपस में अपने दिनों के बारे में सोचता हूं, तो मुझ पर एक शांति छा जाती है। इसने मुझे एक समुदाय, उद्देश्य की भावना और अपने रास्ते पर चलने का आत्मविश्वास दिया। अंक कभी भी उतने मायने नहीं रखते, जितने मैंने अपने साथ सीखे सबक - अच्छा करने की उम्मीद, मैंने जो दयालुता का अनुभव किया और अपने आस-पास के लोगों से जो समझ हासिल की। मैं संदेह के साथ शूलिनी आया था, मुझे यकीन नहीं था कि मैंने सही चुनाव किया है, खासकर पत्रकारिता मेरे लिए इतनी नई थी। लेकिन यह यात्रा न केवल व्यक्तिगत रूप से बल्कि पत्रकारिता को देखने के तरीके में भी परिवर्तनकारी साबित हुई। इसने मुझमें समाचार के प्रति जिम्मेदारी की गहरी भावना पैदा की और समाज में इसकी भूमिका के बारे में मेरी समझ को नया रूप दिया। समाचार हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गए और उस समय की मेरी सबसे प्यारी यादों में से एक हमारे प्रोफेसर विपिन पब्बी के साथ कक्षा से पहले वर्तमान घटनाओं पर चर्चा करना था। इससे हमारे बीच हमेशा उत्साह और जिज्ञासा की भावना पैदा होती थी। मेरे सहपाठियों के विविध दृष्टिकोणों ने उन चर्चाओं में गहराई और अर्थ जोड़ा। साथ में, उन्होंने मुझे संतुलन खोजने में मदद की और अब, जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं, तो मैं मुस्कुराता हूं, यह जानकर कि मैंने अपने जीवन का सबसे अच्छा निर्णय लिया था।

*(लेखक शूलिनी विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मीडिया एंड कम्युनिकेशंस के पूर्व छात्र हैं)

स्पीक आऊट

जाति जनगणना के सवाल पर छात्र बंटे हुए हैं...

भारत में जाति जनगणना के विचार ने बहस छेड़ दी है। इसके पक्ष में रहने वाले इसे जाति आधारित असमानताओं को दूर करने का एक तरीका मानते हैं, जबकि आलोचकों को डर है कि इससे विभाजन और गहरा हो सकता है। हमने छात्रों के एक समूह से पूछा कि क्या वे जाति जनगणना के पक्ष में हैं और क्यों। **पेश है नीरज शर्मा के इंटरव्यू के अंश -**

मैं जाति जनगणना का समर्थन करता हूँ क्योंकि इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि विभिन्न समुदाय कैसे काम कर रहे हैं, खासकर वे जो दलित और ओबीसी जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। सटीक डेटा के साथ, सरकार इन समूहों की मदद के लिए बेहतर योजनाएँ बना सकती है। कुछ लोगों को चिंता है कि इससे विभाजन हो सकता है, लेकिन समस्या को जानना इसे ठीक करने का पहला कदम है। नौकरियों, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा में असमानता से निपटना महत्वपूर्ण है।

समर्थ सिंह, बीबीए डेटा एनालिटिक्स

मैं जाति जनगणना का समर्थन नहीं करता क्योंकि इससे जाति विभाजन मजबूत हो सकता है। भारत जातिगत मतभेदों को कम करने की कोशिश कर रहा है और उन पर ध्यान केंद्रित करने से यह प्रगति उलट सकती है। जाति के बजाय, हमें सभी को प्रभावित करने वाले आर्थिक मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए। जाति को उजागर करने से संघर्ष और भेदभाव बढ़ सकता है।

अमर, बीबीए बिजनेस एनालिटिकल

सरकारी योजनाओं को निष्पक्ष बनाने के लिए जाति जनगणना महत्वपूर्ण है। भारत बहुत विविधतापूर्ण है और कई सामाजिक कार्यक्रम विशिष्ट समुदायों के लिए हैं। सटीक संख्याओं के साथ, सरकार शिक्षा, नौकरियों और कल्याण के लिए बेहतर योजना बना सकती है। यह लोगों को विभाजित करने के बारे में नहीं है, बल्कि वास्तविक समस्याओं को ठीक करने के बारे में है जो जाति के आंकड़ों को अनदेखा करने से दूर नहीं होंगी।

बिलाल, डिजिटल मार्केटिंग

मैं जाति जनगणना के खिलाफ हूं, क्योंकि राजनीतिक दल इसका इस्तेमाल अपने फायदे के लिए कर सकते हैं। लोगों की मदद करने के बजाय, इसका इस्तेमाल वोटों के लिए विभाजन पैदा करने के लिए किया जा सकता है। भारत पहले से ही जाति के आधार पर विभाजित है और इस डेटा को इकट्ठा करने से तनाव बढ़ सकता है। सरकार को गरीबों की मदद करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, चाहे उनकी जाति कुछ भी हो।

सक्षम, बीटेक बायोटेक

जाति जनगणना यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकती है कि वंचित समूहों को उचित उपचार मिले। कई समुदायों को अनदेखा कर दिया जाता है, क्योंकि हम उनके सटीक आकार या जरूरतों को नहीं जानते हैं। उचित डेटा के साथ, आरक्षण और कल्याण कार्यक्रमों को उनकी बेहतर मदद करने के लिए समायोजित किया जा सकता है। यह असमानता को कम करने और हाशिए के समूहों को अधिक अवसर देने का एक तरीका है।

श्रुति, बीबीए जनरल

आज के भारत में हमें जाति पर ध्यान नहीं देना चाहिए। इसके बजाय, हमें गरीबी और धन के अंतर को समझने के लिए आर्थिक जनगणना पर ध्यान देना चाहिए। जाति जनगणना लोगों को और अधिक विभाजित कर सकती है। सरकार को सभी आर्थिक रूप से वंचित लोगों की मदद करने के लिए नीतियाँ बनानी चाहिए, चाहे उनकी जाति कुछ भी हो। मेरा मानना है कि जाति पर ध्यान केंद्रित करने से एकता को नुकसान पहुँच सकता है।

वैशाली ठाकुर, बीटेक बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च

मुझे लगता है कि जाति जनगणना महत्वपूर्ण है ,क्योंकि यह दिखाएगी कि विभिन्न जाति समूह कैसे रह रहे हैं। इससे सरकार को यह देखने में मदद मिल सकती है कि सबसे बड़े अंतर कहाँ हैं और उन्हें ठीक किया जा सकता है। कुछ जातियों के पास अभी भी अच्छी शिक्षा या नौकरियों तक पहुँच नहीं है, और यह डेटा बेहतर नीतियाँ बनाने में मदद कर सकता है। यह लोगों को विभाजित करने के बारे में नहीं है, बल्कि यह समझने के बारे में है कि किसे अधिक समर्थन की आवश्यकता है।

आरुषि, बीटेक बायोइन्फॉर्मेटिक्स

मैं जाति जनगणना के पक्ष में नहीं हूँ क्योंकि इससे विभिन्न जाति समूहों के बीच अधिक तनाव हो सकता है। हम जातिगत मतभेदों से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन उन पर ध्यान केंद्रित करने से हम पीछे जा सकते हैं। इसके बजाय, सरकार को जाति के आधार पर नहीं बल्कि उनकी आर्थिक स्थिति के आधार पर लोगों की मदद करने पर काम करना चाहिए। जाति से संबंधित डेटा अनावश्यक बहस और विभाजन का कारण बन सकता है।

ओशीन कौल, बीटेक बायोटेक्नोलॉजी

मंचतंत्र से झलकियाँ...

फोटो : प्रेम भट्टी और महेश राणा

Shoolini University

No.1

PRIVATE UNIVERSITY IN INDIA

THE World University Rankings 2024

250+ GLOBAL ALLIANCES
with the world's top universities

104+ LABORATORIES
for Cutting Edge Research

1300+ PATENTS FILED
Among the Highest in India

18 LACS HIGHEST PACKAGE
Ave. Package 7.5 LPA

250+ RECRUITERS
including Top MNCs

5000+ PLACEMENTS
100% in MBA | BTech | HM

150+ FUTURE-READY PROGRAMS

Mentored by **faculty from the world's Top 1% organizations** like McKinsey, PwC, Citi and institutions like IIT, IIM, ISB, Oxford, Stanford, Cambridge, UC Berkeley, and many more.

APPLY NOW
by scanning the QR Code below

COMPUTER SCIENCE ENGINEERING
Artificial Intelligence /Data Science
Cloud Computing/ Cyber Security
BTech | MTech | PhD

ENGINEERING
Mechanical/Electronics/Civil
BTech | MTech | PhD

PHARMACEUTICAL SCIENCES
BPharm | MPharm | PhD

MANAGEMENT SCIENCES
BBA | MBA | PhD

LAW
LLB | LLM | PhD

BIOTECHNOLOGY / MICROBIOLOGY
BTech | MTech | BSc | MSc | PhD

FOOD TECHNOLOGY
BTech | MTech | BSc | MSc | PhD

HOTEL MANAGEMENT
BSc | BBA | MBA

SCIENCES / AGRICULTURE
BSc(Hons) | MSc | PhD

LIBERAL ARTS
BA | MA | PhD

YOGIC SCIENCES
BA | BSc | MA | MSc | PhD

JOURNALISM & MASS COMUNICATION
BA | MA | PhD

BIOINFORMATICS
BTech

NUTRITION & DIETETICS
BSc (Hons) | MSc

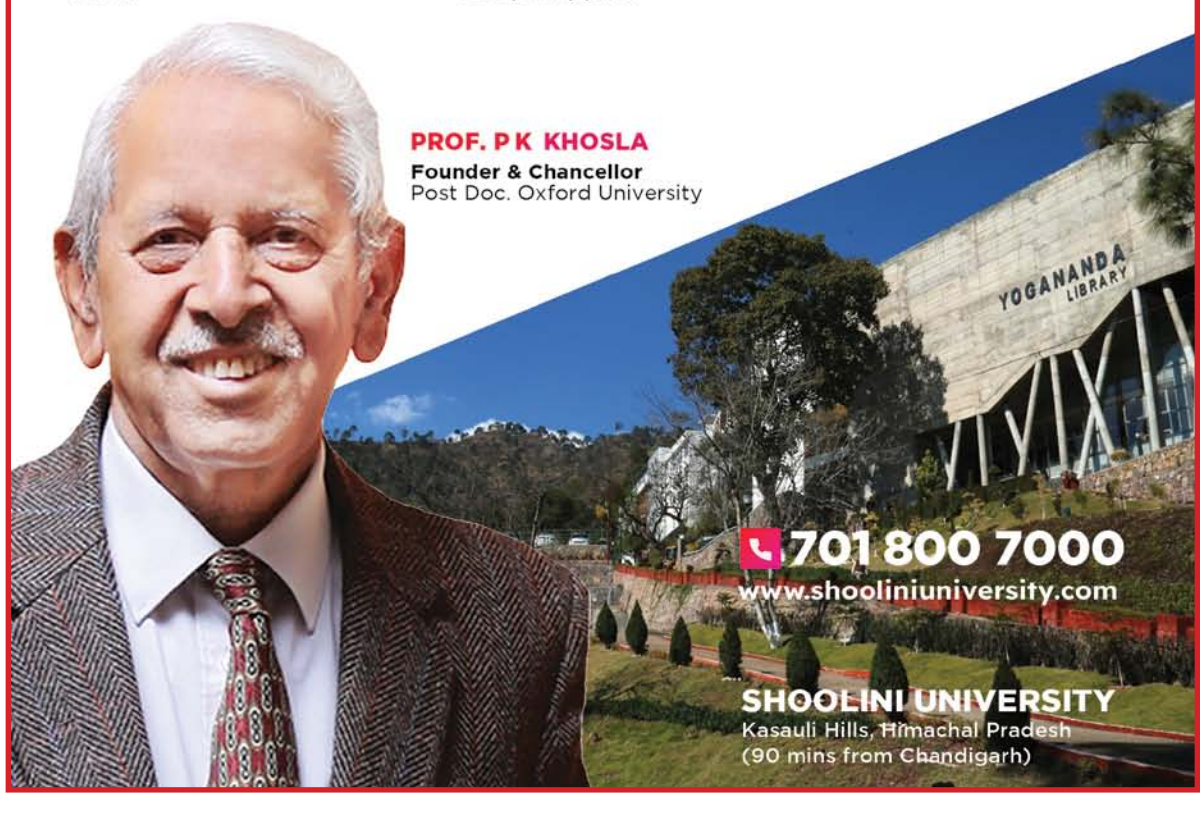

स्कूल ऑफ़ जर्नलिज़म एंड न्यू मीडिया, शूलिनी विश्वविद्यालय, कसौली हिल्स, सोलन द्वारा विपिन पब्बी, पूर्व रेजिडेंट एडिटर, द इंडियन एक्सप्रेस के मार्गदर्शन में प्रकाशित। संकाय संपादकः प्रो पार्थ शर्मा। प्रमुख अनुवादकः डॉ. प्रकाश चंद। छात्र संपादकः स्वर्णिम सुप्रकाश, साक्षी कुमारी। आईई प्रेस, सी-5, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर 6, पंचकुला 134109 में मुद्रित। टेलीफोनः 01792-308000